



दैनिक समाचार बुलेटिन

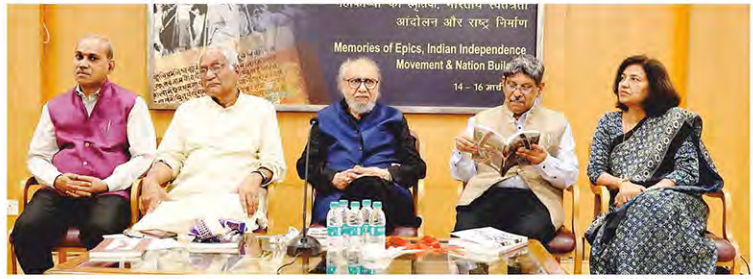
बुधवार, 15 मार्च 2023

## राष्ट्रीय संगोष्ठी

# महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्र निर्माण

हमारे दो महाकाव्यों रामायण और महाभारत में हमारी स्वतंत्रता के प्रेरक तत्व के समाहित हैं। महात्मा गाँधी जहाँ रामायण (तुलसी के रामचरितमानस) से प्रेरणा लेते हैं तो बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिनचंद्र पाल, 'गीता' से प्रेरणा लेते हैं जोकि 'महाभारत' का ही एक हिस्सा है। उक्त बातें लब्धप्रतिष्ठ हिंदी लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन वक्तव्य में कहीं। आगे उन्होंने कहा कि 'सत्याग्रह' और 'स्वराज' जो गाँधी के सबसे बड़े शस्त्र थे। वे तुलसीदास की रामचरितमानस द्वारा ही उन तक पहुँचते हैं। अपने कई भाषण और लेखों में महात्मा गाँधी हमेशा असत से दूर रहने (सत्याग्रह) या रामराज्य को स्वराज्य के रूप में प्रस्तावित करते हैं। यानी एक रामराज्य का सपना भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वराज्य की परिकल्पना के रूप में उभरता है। हमारे सभी राष्ट्रीय नेता केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं चाहते बल्कि वे नैतिक व सामाजिक स्वतंत्रता भी चाहते हैं। जिसकी प्रेरणा हमें अपने इन दोनों महाकाव्यों से ही मिलती है। इन दोनों महाकाव्यों ने देश की आम जनता को भी जाग्रत किया। इसी कारण हमारे कई राजनेताओं को जमीनी स्तर पर उनसे संवाद करने में कामयाबी मिली, जिससे स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में वातावरण तैयार हुआ।

प्रख्यात सामाजिक सिद्धांतकार एवं आलोचक आशीष नंदी ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि किसी भी रचना को कालजयी महाकाव्य का दर्जा तीन तथ्य देते हैं, जिसमें पहला है नायक का अविश्वनीय तरीके से जन्म, युद्ध की पृष्ठभूमि और सौतेली माँ का व्यवहार आगे उन्होंने कहा कि जनता से सीधा संवाद



करने में भक्त कवियों और सूफियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐसा इसलिए संभव हुआ कि उन्होंने महाकाव्यों को अपनी-अपनी भाषाओं के हिसाब से इन्हें गाना शुरू किया। इन महाकाव्यों के प्रभाव से ही तर्क-वितर्क के अनेक सूत्र भी निकले हैं, जिनके आधार पर आम जनता ने अच्छे और बुरे चरित्रों का चुनाव आगे अपनी रचनाओं में प्राप्त किया। अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि महाकाव्य केवल कुछ खास विशेष के लिए नहीं बल्कि आम जनता के लिए होते हैं। जैसे समय आगे बढ़ता गया लेखकीय और वाचकीय रूप में रामायण और महाभारत के अनेक संस्करण उपलब्ध होने लगे। समाज की आंतरिक संवेदना हमारे महाकाव्यों में ही संरक्षित है। हमारे महाकाव्य जीवन के प्रति अधिक विविधता के साथ विचार करने का अवसर देते हैं।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि इन दोनों महाकाव्यों में हमारी जातीय स्मृतियाँ संरक्षित हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में जहाँ महात्मा गाँधी रामायण को अपना आधार बनाते हैं वहीं दूसरी ओर एक क्रांतिकारी दल महाभारत को आधार बनाता है। लोक मानस में और अनेक लोक भाषाओं में इनके उपलब्ध होने के कारण इन्हें के माध्यम से जनता को राष्ट्रीय आंदोलन

## आज के कार्यक्रम

**परिचर्चा : मीडिया, न्यू मीडिया और साहित्य**  
वाल्मीकी सभागार, पूर्वाह्न 10.30 बजे

**पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी एवं पश्चिमी लेखक सम्मेलन)**  
वाल्मीकी सभागार, अपराह्न 2.30 बजे

**कथासंधि : अब्दुस समद, प्रख्यात उर्दू कथाकार के साथ**  
वाल्मीकी सभागार, सायं 5.00 बजे

**एल.जी.बी.टी.क्यू. लेखक सम्मेलन (जारी...)**  
व्यास सभागार, पूर्वाह्न 10.00 बजे

**परिचर्चा : डिजिटल युग में प्रकाशन**  
व्यास सभागार, अपराह्न 2.30 बजे

**परिचर्चा : सिनेमा और साहित्य**  
तिरुवल्लुवर सभागार, पूर्वाह्न 11.00 बजे

**परिचर्चा : भारत में आदिवासी समुदायों के महाकाव्य**  
तिरुवल्लुवर सभागार, अपराह्न 2.30 बजे

**राष्ट्रीय संगोष्ठी : महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण (जारी...)**  
साहित्य अकादेमी सभागार प्रथम तल, पूर्वाह्न 10.00 बजे

**इंडो-कज़ाक लेखक सम्मेलन**

साहित्य अकादेमी सभागार, तृतीय तल, सायं 5.00 बजे

**सांस्कृतिक कार्यक्रम : साहित्य एवं अभिनय : पाठ से प्रस्तुति, जयंत कस्तुआर द्वारा**

तिरुवल्लुवर सभागार, सायं 6.00 बजे



में कूदने के लिए तैयार किया गया। आज भी हमारे लेखन पर इनका प्रभाव देखा जा सकता है।

समापन वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा कि भारत की आंतरिकता इन दोनों महाकाव्यों में बसती है। इन महाकाव्यों ने ही स्वतंत्रता के समय नए नायकों की ज़रूरत को पूरा किया। सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में जो नए नायक उभरे, उनकी प्रेरणा इन दोनों महाकाव्यों में ही थी। कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि कोई भी देश अपनी संचित स्मृतियों ज़िंदा रखते हुए ही कोई नव निर्माण कर सकता है।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र 'साहित्य और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन' की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के पूर्व प्रोफ़ेसर और विभागाध्यक्ष हरीश त्रिवेदी ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने साहित्योत्सव की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह वर्ष की बात है कि एक ही जगह, एक ही दिन, एक साथ पाँच-पाँच कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस तरह के कार्यक्रम साहित्यिक जागरूकता फैलाते हैं। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि एक ही विषय के विभिन्न संदर्भ हो सकते हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि आप किसी विषय को किस संदर्भ में लेते हैं।

हरीश त्रिवेदी ने आगे कहा कि क्योंकि हम एक निश्चित विषय चुनते हैं और हम मानते हैं कि यह उस विषय का मुख्य पहलू है, यह सच हो भी सकता है और नहीं भी। आज हम यहाँ न केवल यादों को उजागर करने के लिए हैं, बल्कि कभी न खल होने वाली प्रतिध्वनियों को प्रस्तुत करेंगे। यादें अतीत की बातें हैं लेकिन यह एक प्रतिध्वनि है जो बार-बार गूँजती रहती है। हमें अपने महाकाव्यों के वास्तविक मूल्य और उनके द्वारा हमारे सभी आंदोलनों में जोड़े गए मूल्य को समझने की आवश्यकता है।

सत्र में शामिल प्रख्यात समीक्षक और अनुवादक आलोक गुप्त ने 'हिंदी और गुजराती



साहित्य : पुनरुत्थान से राष्ट्रीय चेतना की ओर' आलेख का पाठ किया। इस आलेख में उन्होंने 19वीं सदी के गुजराती और हिंदी साहित्यकारों पर चर्चा की, साथ ही समय के साथ-साथ साहित्य में व्याप्त विसंगतियों पर भी तीखी प्रतिक्रिया दी। इस आलेख में उन्होंने हिंदी व गुजराती के पौराणिक महाकाव्यों, जिसमें महाभारत एवं रामायण के कुछ अंशों, कीचक वध, मंथरा चरित्र, दौपट्री, उर्मिला की मनोस्थिति, का सक्षिप्त में परिचय दिया। उन्होंने विशेष रूप से दिनकर, सुमित्रानंदन पंत आदि लेखकों की रचनाओं को उद्घाटित करते हुए अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए।

हिंदी कवि और निबंधकार अरुण कमल ने 'साहित्य और भारत का स्वाधीनता आंदोलन' शीर्षक आलेख का पाठ किया। आलेख का केंद्र बिंदु था - कैसे साहित्यकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य के माध्यम से योगदान दिया। आलेख पढ़ते समय उन्होंने कहा कि देश की सभी भाषाओं में व्याप्त भक्ति आंदोलन ने, अक्क महादेवी, मीरा, कबीर, तुकाराम, शाह लतीफ, गुरु नानक आदि, स्वाधीनता, बराबरी और मानव गरिमा को सर्वोच्च मूल्य के रूप में स्थापित किया और किसी भी सांसारिक सत्ता के सामने कभी सिर नहीं झुकाया। स्वाधीनता संग्राम में कविताओं के महत्त्व को उजागर करते हुए उन्होंने कहा कि भारतेंदु से लेकर 1947 तक की संपूर्ण हिंदी कविता का प्राण स्वाधीनता की भावना है जो अलग अलग काल-खंड में अन्य भावों या प्रवृत्तियों से मिल कर भारतीय जन के चित्त को अभिव्यक्त और प्रभावित करती रही।

अगला आलेख पाठ तेलुगु लेखिका और



अनुवादिका सी. मृगालिनी ने किया। उनके आलेख का शीर्षक था - 'लिटरेचर एंड इंडियन इडिपेंडेंट मूवमेंट'। यह आलेख स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान तेलुगु में लिखे गए साहित्य पर आधारित था। आलेख में 40 साल के तेलुगु साहित्य को प्रस्तुत किया गया। इन 40 वर्षों के साहित्य को उन्होंने 4 चरणों में बाँटा था - क्रोध और घृणा, स्वाभिमान और अभिमान, आत्म-आलोचना या आत्मनिरीक्षण एवं मूल्यांकन या पुनरावलोकन। आलेख के समापन पर उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन तेलुगु साहित्य में ये चारों चरण साहित्य की हर विधा- कविता, गीत, कहानी, उपन्यास और नाटक में देखे गए थे।

विदुषी एवं शिक्षक सीमा शर्मा ने 'गांधियन कांसेप्स इन इंडियन नॉवेल इन इंग्लिश' शीर्षक से अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस आलेख में मुक्त राज आनंद के अनटवेबल (1935), राजा राव का कंधापुरा (1938), भवानी भट्टाचार्य के सो मैनी हंगर (1947) उपन्यासों पर चर्चा की गई। आलेख में यह भी स्पष्ट किया गया कि 1930 और 40 के दशक के उपन्यास उपनिवेश-विरोधी थे। इस दौर के लेखकों की राजनीतिक सक्रियता और सामाजिक सुधार में निभाई गई भूमिका गाँधीवादी विचारधारा के काफी निकट थी।

साहित्योत्सव के चतुर्थ दिन 'महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्र निर्माण राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय सत्र 'भगवद्गीता, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं राष्ट्र निर्माण' की अध्यक्षता प्रख्यात दार्शनिक संस्कृतज्ञ और सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर एस.आर. भट्ट ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता ने हमारे तीन महान स्वतंत्रता सेनानियों को प्रभावित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने उन्हें कर्म के दर्शन में विश्वास करने की मानसिक शक्ति प्रदान की। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता सद्भाव पैदा करती है।

द्वितीय सत्र में लोकप्रिय युवा कवि बिनायक





बंधोपाध्याय ने 'श्रीमद्भगवद्गीता - द एसेंस ऑफ़ इंडियाज़ आइडेंटिटी' शीर्षक से अपना आलेख प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता को आज के संदर्भ में प्रासंगिक बताया और कहा कि कृष्ण ने विभिन्न जातिय समाज में सभ्यताओं को

जोड़ने की और शांति और सद्भाव स्थापित कोशिश की। आज हमारे समाज में भी एकता की आवश्यकता है।

सत्र के अन्य प्रतिभागी प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान एम. ए. अलवार ने अपने आलेख पठन के द्वारा बताया कि हम अकसर पश्चिमी देशों की आर्थिक स्थिति और सेना स्थिति से अपनी स्थिति की तुलना करते हैं लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि केवल भारत में ही आध्यमिक शक्ति है, जो बाकी अन्य शक्तियों को नियंत्रित करती है। आर्थिक, सेना व अध्यात्मिक शक्ति मिलकर ही किसी राष्ट्र का निर्माण करती है। भगवद्गीता से समय-समय पर हमको मार्गदर्शन मिलता रहा है।

प्रख्यात हिंदी लेखक सूर्य प्रसाद दीक्षित ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि भगवद्गीता में वेदों, भारतीय संस्कृति का निचोड़ है। आज़ादी का संघर्ष लंबे समय तक चला। इसमें विभिन्न वर्ग शामिल हुए। कभी सफलता मिली तो कभी असफलता और इस असफलता ने अवसाद भी दिया। श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन की मनोस्थिति का विवरण देते हुए उन्होंने कहा कि युद्ध के मैदान में अर्जुन द्रुपद में थे कि वह कैसे अपने गुरु, पितामह, भाई के विरुद्ध लड़े। ऐसे में कृष्ण ने उनका मार्गदर्शन किया। कितने ही स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने भगवद्गीता को पढ़ा एवं स्वयं में एक नई ऊर्जा का संचार किया।

### अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

## एक पृथ्वी . एक परिवार . एक भविष्य

साहित्योत्सव के चतुर्थ दिन साहित्य अकादेमी परिसर के वाल्मीकि सभागार में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन - 'एक पृथ्वी . एक परिवार . एक भविष्य' विषय पर आयोजित किया गया। उद्घाटन प्रख्यात हिंदी लेखक एवं विद्वान लीलाधर जगूड़ी ने किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराम ने अंगवस्त्रम् व किताब भेंट कर उनका स्वागत किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'कबीर' (चयन : क्षितिमोहन सेन) का लोकार्पण लीलाधर जगूड़ी व संस्कृत कवि एवं विद्वान अभिराज राजेंद्र मिश्र ने किया।

लीलाधर जगूड़ी ने अपने वक्तव्य में आधुनिकता पर बात करते हुए कहा कि हम जितने पुरातन हैं उतने ही नवीन हैं। आधुनिक होने के लिए समय को जानना-समझना बहुत ज़रूरी है। आगे उन्होंने 'पृथ्वी' शब्द पर प्रकाश

डालते हुए कहा कि पृथ्वी केवल धरती नहीं है बल्कि इसमें आकाश सहित पूरा ब्रह्मांड समाहित है। पृथ्वी की बिना आकाश के कल्पना नहीं की जा सकती है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

अल्पज्ञता व ध्वनि की सही जानकारी न होने के कारण लोग शब्दों का सही उच्चारण नहीं करते हैं। इसी बिंदु पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने बताया कि कैसे वसुधैव कटुंबकम का ग़लत उच्चारण किया जा रहा है। लोग वसुधैव को वसुदेव कह रहे हैं।

'पृथ्वी' शब्द पर और अधिक विस्तार से जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि पृथ्वी में जल, अग्नि, वायु समाहित हैं। पृथ्वी में रस, रंग, स्पर्श शामिल है। इन तत्वों के माध्यम से हमने जीवन को जाना है। यह केवल मिट्टी और पत्थर का नाम नहीं है। कटुंब को लेकर उन्होंने श्रोताओं से कहा कि आज हम कटुंब को केवल अपने



परिवार के रूप में देखते हैं लेकिन जिन्होंने इस शब्द की रचना की उन्होंने इसे विश्व के रूप में देखा और एक ऐसी भावना के रूप में देखा जो एक को दूसरे से जोड़ती है।

आगे अपने वक्तव्य में उन्होंने भाषा संबंधी बारीकियों पर बात की और कहा कि अभी हिंदी वर्णमाला में काम होना बाकी है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात संस्कृत कवि एवं विद्वान अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की।



सम्मिलन के शीर्षक पर उन्होंने कहा कि हम सब एक ही परिवार का हिस्सा हैं और हमारा एक ही भविष्य है। भारतीय परंपरा की बात करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय ऋषि-मुनियों ने केवल भारत को ही अपना कुटुंब नहीं, बल्कि पूरे विश्व को एक कुटुंब के रूप में देखा था। हमारे पुरखों की दृष्टि, खंडित दृष्टि नहीं थी, उन्होंने पूरे विश्व को एक परिवार माना था। हम सबको विश्व की रक्षा करनी है तथा जिस मिट्टी में हमने जन्म लिया है उस देश-मिट्टी पर गौरव करना है।

असमिया भाषा की कवयित्री करबी डेका हाज़रिका ने 'आई हैव माई चिल्ड्रेन इन ऑफ द कंट्रीज' शीर्षक का कविता पाठ किया। उन्होंने इस कविता की शुरुआती पंक्तियों का असमिया में पाठ किया। उसके बाद अनूदित रूप में कविता सुनाई। शिबाशीष मुखोपाध्याय (बाङ्ला), नसीब सिंह मन्हास (डोंगरी),



अश्विनी कुमार (अंग्रेज़ी), हरीश मंगलम (गुजराती), ओम निश्चल (हिंदी), एल. हनुमंतैया (कन्नड) ने अपनी-अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

अपराह्न 2.30 बजे द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात उर्दू कवि एवं आलोचक शीन काफ़ निज़ाम ने की। उन्होंने कहा कि साहित्य और रचना एक धारा की तरह है, भाषाएँ इनके अलग-अलग घाट हैं। उन्होंने भारतीय साहित्य

के एकात्म रूप को दर्शाने के लिए कबीर का दोहा भी सुनाया। सत्र में शफ़ी शौक (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), बुदिनाथ मिश्र (मैथिली), अलंकोड लीलाकृष्णन (मलयाळम), क्षेत्री राजन (मणिपुरी), श्रीधर नाडेडकर (मराठी), मनप्रसाद सुब्बा (नेपाली) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात बोडो कवि एवं आलोचक अनिल बर' ने की तथा सत्र में रंजन कुमार दास (ओड़िआ), वनीता (पंजाबी), सुमन बिस्सा (राजस्थानी), दमयंती बेसरा (संताली), खीमन यू. मूलाणी (सिंधी), रवि सुब्रमण्यन (तमिळ) तथा नंदिनी सिद्धा रेड्डी (तेलुगु) ने अपनी-अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सभी कवियों ने एक कविता अपनी मूल भाषा में तथा शेष उनके अनुवाद प्रस्तुत किए।



## नारी चेतना

साहित्योत्सव 2023 के दौरान 'नारी चेतना' कार्यक्रम विनीता अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। अंग्रेज़ी कवयित्री ममंग दई ने अपनी दो कविताएँ पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन पर प्रस्तुत कीं, जिससे यह तथ्य सामने आया कि महिलाओं को जलवायु परिवर्तन के बोझ का सामना कैसे करना पड़ता है। प्रख्यात कवयित्री नीतू ने अपनी एक अंग्रेज़ी कविता 'पार्ट ऑफ यू' और तीन हिंदी कविताएँ 'लकीरें', 'खंडित चीज़ें' और 'नगण्य' का पाठ किया। कवयित्री ममता किरण ने अपनी हिंदी कविताओं 'हिस्सा', 'नदी का जीवन' और 'इंतज़ार' का पाठ किया, जो हमारे समाज के पितृसत्तात्मक मानकों को उजागर करते हैं। प्रख्यात कवयित्री मंदिरा घोष ने अंग्रेज़ी में अपनी कविताओं का पाठ किया, 'आई हैव माई कॉन्सियसनेस', काफ़काज़ वर्ल्ड' जो महामारी के दौरान लिखी गई थी। कवयित्री दीपा अग्रवाल



ने हाल ही में प्रकाशित अपने संग्रह 'फॉरगॉटन कैलिडोस्कोप' की कविताओं का पाठ किया। कवयित्री नेहा बंसल ने अपनी दो कविताएँ, 'सीताज़ टेस्ट बाई फायर' और 'द वूम्ब' पढ़ीं, जो एक 'सरोगेट माँ' की दुर्दशा के बारे में थी। कवयित्री सलमा ने तमिळ में अपनी कविता का पाठ किया और बाद में ममंग दई ने उसका अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया। कवयित्री सीमा जैन ने अपनी अंग्रेज़ी कविताओं, 'आइसबर्ग', 'हवाई माई लॉर्ड' का पाठ किया। कवयित्री

विनीता अग्रवाल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध अमेरिकी कवि और नागरिक अधिकार कार्यकर्ता माया एंजेलो के एक उद्धरण के साथ सत्र का समापन किया : "मैं एक महिला होने के लिए आभारी हूँ, मैंने किसी दूसरे के जीवन में कुछ बहुत अच्छा किया होगा।" अंत में उन्होंने बीकानेर शहर में बिताए अपने जीवन और बचपन को याद करते हुए अपनी एक कविता 'हूवेन आई कम फ्रॉम' सुनाई।

## परिचर्चा : नाट्य लेखन

साहित्योत्सव 2023 के दौरान साहित्य अकादेमी द्वारा नाट्य लेखन पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया।

परिचर्चा का उद्घाटन लब्धप्रतिष्ठ अभिनेता मोहन अगाशे ने किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि नाटक लिखना और इसको प्रस्तुत करना दोनों अलग-अलग है। उन्होंने शब्दों की पूरी यात्रा का खाका खींचते हुए कहा कि अब शब्द हमारे साथ लगातार बने रहते हैं और उनसे हमें कितना और कैसा संबंध रखना है यह कोई और निर्धारित करता है। अपने अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने बताया कि विजय तेंदुलकर का लिखा हुआ नाटक 'घासीराम कोतवाल' मात्र 39 पृष्ठों में है, लेकिन लेखक ने उसको प्रस्तुत करने के इतने सुझाव टिप्पणी के रूप में दिए हैं कि हर किसी को इसे प्रस्तुत करने की नई दृष्टि और समझ मिल जाती है। अच्छा लिखने, अच्छा देखने और अच्छा प्रस्तुत करने के लिए समस्त ज्ञानेन्द्रियों का संतुलन आवश्यक है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता दया प्रकाश सिन्हा ने की। बाङ्ला के प्रतिष्ठित नाटककार चंदन सेन ने कहा कि बाङ्ला साहित्य में नाट्य लेखन अत्यंत समृद्ध है। उन्होंने कई नाटककारों का जिक्र किया।

प्रख्यात कन्नड लेखक और नाटककार के. वाई. नारायणस्वामी ने कहा कि श्रीरंगा कन्नड थियेटर के प्रथम नाटककार और अभिनेता थे। गिरीश कर्नाड, चंद्रशेखर कंबार, एच.एस.

शिवप्रकाश, लंकेश आदि प्रतिष्ठित नाटककारों का भी जिक्र किया, जिन्होंने कन्नड थियेटर को एक नया आयाम दिया।

मणिपुरी के प्रतिष्ठित निर्देशक नोडथोमबम प्रेमचंद ने कहा कि दो दशक से भी अधिक समय से मणिपुरी भाषा में नाट्य लेखन नहीं हो रहा है। मणिपुरी भाषा में नाट्य लेखन खत्म होने की कगार पर है। सन् 1903 में बाङ्ला भाषा में मणिपुर में नाटक का प्रदर्शन प्रारंभ हुआ। बाद में मणिपुर की लोककला, वहाँ के इतिहास पर नाट्य लेखन प्रारंभ हुआ।

मराठी के प्रख्यात नाटककार एवं लेखक अभिराम भडकमकर ने कहा कि महाराष्ट्र में थियेटर की बहुत समृद्ध परंपरा रही है। नाट्य लेखन की समृद्धि के लिए अनुवाद की कोई व्यवस्था होनी चाहिए। एक भाषा के नाटक को विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराकर रंगमंच पर अभिर्मचित कराने की आवश्यकता है।

इस सत्र के अंत में प्रख्यात नाट्य लेखक दया प्रकाश सिन्हा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हमें निर्देशक की आवश्यकता के अनुसार नाटक का लेखन नहीं करना चाहिए। आपके नाटक को चाहे निर्देशक स्वीकार करे या नहीं, नाटककार को अपनी स्वतः अनुभूति से नाट्य लेखन करना चाहिए। नाटक दो आयामी विधा है, नाटक साहित्य भी है और नाटक भी।

द्वितीय सत्र में तेलुगु लेखक, नाटककार,



अभिनेता और निर्देशक डी. श्रीनिवास ने कहा कि भारतीय नाटक का विकास 20वीं सदी ईसापूर्व भरतमुनि ने किया। मेरा विश्वास है कि नाटक समाज को बदलने में एक अहम भूमिका निभाता है।

प्रख्यात मलयाळम नाटककार टी.एम. अब्राहम ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि कोई भी प्रकाशक नाटक प्रकाशित नहीं करना चाहता। वे कहते हैं कि आप उपन्यास लिखकर लाएँ तो हम प्रकाशित करेंगे। यह मलयाळम नाटक की बहुत बड़ी समस्या है। हम लगभग 10-15 साल से मलयाळम नाट्य लेखन को प्रोत्साहित करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन अभी तक कोई नया नाटक नहीं लिखा गया है। प्रत्येक साल हम विदेशी भाषाओं की पुस्तकों को खरीद रहे हैं, लेकिन हमारी क्षेत्रीय भाषाओं में नाटक की पुस्तकें प्रकाशित नहीं हो रही हैं।



## आदिवासी लेखक सम्मिलन

‘आदिवासी लेखक सम्मिलन’ कार्यक्रम दूसरे दिन भी जारी रहा। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अरुणाचल प्रदेश के प्रख्यात गालो कवि और गीतकार एच. आर. बाडो ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में आदिवासी भाषा और साहित्य के संरक्षण एवं विकास के लिए प्रयास करने और आदिवासी लोगों को आगे लाने के लिए साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि अरुणाचल प्रदेश में 28 आदिवासी भाषाएँ हैं। ये भाषाएँ लुप्तप्राय हैं। लुप्तप्राय भाषाओं को जीवित रखने का ज़रिया है इस तरह की संगोष्ठियाँ, सम्मिलन और पुस्तकें। गारो भाषा, बहुत समृद्ध है इसमें एक शब्द में ही अंग्रेज़ी का एक वाक्य समाहित हो जाता है, लेकिन गारो भाषी लगभग 2 लाख ही हैं और इस भाषा को बचाए रखने के लिए उनकी भाषा और संस्कृति को बचाए रखना आवश्यक है।

उसके बाद बल्टी लेखक सादिक हरदासी ने लद्दाख के बल्टी लोगों की भाषा और संस्कृति की विस्तृत चर्चा की। गारो लेखक क्रिस्टल कॉर्निलियस डी. मराक ने तिब्बती लोगों की साहित्य, संस्कृति आदि के बारे में बताया और इस भाषा के बोलने वालों के तथा खासी भाषा एवं संस्कृति के बारे में भी विस्तार से चर्चा की। मीणी लेखिका हीरा मीणा ने अपनी संबंधित जनजातीय भाषाओं और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जनजातीय भाषाओं की पहचान की खोज पर अपना पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आदिवासी भाषाओं का साहित्य राष्ट्रीय ही



नहीं अंतरराष्ट्रीय है। हमारी मूल पहचान हमारी भाषा है। संसार का बृहद ज्ञान आदिवासी भाषा में छिपा है। आदिवासी भाषा और साहित्य संसार के ज्ञान की कुंजी है। हमारा साहित्य वाचिक साहित्य पुरखों का साहित्य है। भारत में आदिवासी भाषा परिवार में आदिवासी भाषा का साहित्य बहुत कम उपलब्ध है और अगर है भी तो वाचिक साहित्य है। आदिवासी भाषाएँ सबसे प्राचीन हैं। लोक साहित्य आदिवासी साहित्य का ही एक रूप है। हमें यह अनमोल धरोहर अपने पुरखों से प्राप्त हुई है।

सम्मिलन का तीसरा सत्र पूर्वाह्न 11.00 बजे आरंभ हुआ जो कहानी-पाठ को समर्पित था। प्रख्यात कुई लेखक विश्वंभर प्रधान ने सत्र की अध्यक्षता की और अपनी कहानी ‘पलटन बाग’ पढ़ी। लेप्चा लेखक गौतम लेप्चा, लोथा लेखक जानबेमो हम्सो, पुर्गी लेखक अब्बास जमीर

लुमैली ने भी अपनी कहानी का पाठ किए।

चौथा और अंतिम सत्र मध्याह्न 12.00 बजे आरंभ हुआ, जो कविता को समर्पित था। प्रख्यात अनल लेखक बी. एस. खेल्हरिड अनल ने सत्र की अध्यक्षता की। बंजारा कवि बी. गजानंद जाधव, चौधरी कवि प्रीतेशकुमार छोटूभाई चौधरी, देवली कवि सुमित्रा धर्मसिंह वसावे, खासी कवि एस्तेर जून ई. शोंगवान, मिजो कवि लालवेनसांगी चावड्यू, पारधी कवि मंजूनाथ काले, पौमई नागा कवि आर. न्गुपानी ताओ, रथवी कवि सुधा अजयसिंह चौहान और शीना कवि अहसान अली बिस्मिल ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। बी. एस. खेल्हरिड अनल ने सत्र के समापन में अनल में अपनी गीतात्मक कविता के पाठ के साथ किया, जो अनल लोककथाओं पर आधारित थी और बाद में इसका अनुवाद भी प्रस्तुत किया।



## लेखक से भेंट : उषाकिरण खान



प्रख्यात मैथिली एवं हिंदी लेखिका उषाकिरण खान के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रख्यात हिंदी एवं मैथिली कवि बुद्धिनाथ मिश्र और प्रख्यात हिंदी लेखिका उर्मिला शिरीष ने अंगवस्त्रम् और पुस्तकें भेंट कर उषाकिरण खान का अभिनंदन किया। उषाकिरण खान ने अपने रचनात्मक यात्रा के बारे में विस्तार से बताया। बचपन के दिनों को याद करते हुए उन्होंने कहा कि उन दिनों साहित्य का माहौल था। स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी भी रचनात्मक थे। वे सभी पिताजी के आश्रम में आते थे। पुस्तक भंडार से 'बालक' नाम की पत्रिका प्रकाशित होती

थी। बेनीपुरी जी की पत्रिका भी प्रकाशित होती थी। नागार्जुन जी के साथ मेरे पिता भी जेल में थे तो उनसे आत्मीयता बढ़ गई। वे मेरे सगे चाचा नहीं थे। मैं कवि सम्मेलन आदि में उनके साथ जाती थी। पढ़ाई के दौरान ही मैंने लिखना शुरू कर दिया था। स्कूल-कॉलेज की पत्रिका में भी मेरी कविताएँ प्रकाशित होती रहीं। जब मैंने अपने समकालीनों को लिखते-पढ़ते देखा तो मुझे भी लगा कि मेरी रचनाएँ छपनी चाहिए। लेकिन कविता की ओर मेरा मन रमा नहीं। कहानियों की ओर मेरा मन रमा इसमें नागार्जुन जी का भी कहीं न कहीं प्रभाव पड़ा। रेणुजी के 'मैला ऑंचल' से मैं बहुत प्रभावित हुई थी। महिला लेखिका में उषा प्रियंवदा ने भी मुझे प्रभावित किया। रेणु जी से प्रभावित होकर मैं कोसी के बारे में सोचने लगी। मैं पहली लेखिका हूँ जिसने वहाँ की जीवन-पद्धति को लोगों के सामने रखा। वहाँ अभी भी नाव से पार करके जाना पड़ता है। बाढ़ से कोसी क्षेत्र हमेशा डूब जाता है लेकिन वहाँ के लोग पुनः घर बनाकर हर्षोल्लास के साथ रहते हैं। रेणु एवं नागार्जुन मिथिला की कहानी कहते हैं। मुझे लगा कि हिंदी की दुनिया को अपने क्षेत्र की कहानी बनानी चाहिए। वहाँ 'नो मैन्स लैंड' है, लेकिन जो सुविधाएँ मिलनी चाहिए, वो नहीं मिली है। कोसी का तटबंध बनाने के वक्त लोगों ने उसका विरोध किया, लेकिन सरकार ने जो योजना बनाई उसे पूरा किया जिसके कारण वहाँ जल भराव होता रहता है। लिखने की प्रेरणा मुझे बाबा ने दी। वे मेरे प्रेरक थे। आज तक मेरी रचना किसी भी संपादक के पास से कभी नहीं लौटी। मैंने पहली रचना श्रीपत राय को

भेजी और मेरी दूसरी रचना 'धर्मयुग' में छपी। धर्मवीर भारती ने मुझे बहुत बढ़ावा दिया। एक कहानी में काम करने में मैं हड़बड़ी नहीं करती थी, बहुत इत्मीनान से लिखती थी, उसे पूरा समय देती थी।

भामती लिखने का विचार कैसे आया के उत्तर में लेखिका ने बताया कि यह सिर्फ किंवदंती नहीं, सच भी है। वाचस्पति मिश्र ने 'भाष' का टीका लिखा जो आदिशंकराचार्य ने लिखा था। जब वे टीका करने लगे तो दीन-दुनिया भूल गए। भामती जो उनकी पत्नी थी, उनकी सेवा-सत्कार करती रही। 18 वर्ष तक वे लिखते रहे। उन्होंने उसे सिर उठाकर भी नहीं देखा। एक बार जब वह दीया में तेल डाल रही थी तो उनके हाथ को देखकर लगा कि यह तो किसी अंधेड़ महिला का हाथ है। उन्होंने उसे सिर उठाकर देखा तो उसे वे पहचान नहीं पाए, तो वह रोने लगी कि अब मैं आपको कुछ नहीं दे पाऊँगी। इस पर उन्होंने कहा कि मैं भामती टीका के रूप में एक पुत्र रत्न दे रहा हूँ। वाचस्पति मिश्र दार्शनिक थे।

उस समय बौद्ध हीनयान, महायान, वज्रयान, तंत्रयान हुआ वहाँ तिब्बत से सीधे वे मिथिला आते थे और तंत्रयान के जो तांत्रिक होते थे आश्रम से लड़कियों को उठाकर ले जाते थे। तब वहाँ के लोग उन्होंने आश्रम भेजना बंद कर दिया और छोटी उम्र में ही विवाह करा दिया जाता था, ताकि वे लड़कियों को उठाकर न ले जाएँ। भामती लिखने का यह भी एक कारण बना। पूरे कार्यक्रम के दौरान अनेक लेखक और छात्र मौजूद रहे।

## एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन

साहित्य अकादेमी ने अपने साहित्योत्सव में आज एलजीबीटीक्यू लेखक सम्मिलन का आयोजन किया। प्रख्यात अंग्रेजी कवि होशांग मर्चेंट, ने इस सम्मिलन का उद्घाटन किया और अपना आलेख प्रस्तुत किया जोकि 'गे लिटरेचर इन इंडिया : ए पर्सनल हिस्ट्री' विषय पर केंद्रित था। इस आलेख में समलैंगिक प्रेम और समलैंगिक रोमांटिक कविता का उल्लेख था। उन्होंने अपनी पुस्तक - याराना का उल्लेख किया, जो आधुनिक समलैंगिक कहानियों का एक संकलन है और उन्होंने 'लव ड्रुएट' नामक अपनी कविता भी पढ़ी।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारी प्रख्यात

लेखक एवं शोधकर्ता देविका देवेन्द्र एस मंगलामुखी ने कहा कि पहले एलजीबीटीक्यू समुदाय के बारे में कोई नहीं सोचता था लेकिन अब धीरे-धीरे चीजें बदल रही हैं। उन्होंने सरकारी की सराहना करते हुए कहा कि भारत दुनिया का तीसरा देश है जिसने ट्रांसजेंडरों को मान्यता दी है।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात विद्वान सी.के. गरियाली ने कहा कि वह 1850 से एलजीबीटीक्यू समुदाय के दर्द और पीड़ा से वाकिफ हैं, यह वह समय था जब ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने इस समुदाय को परेशान करना शुरू कर दिया था। उन्होंने कई सच्ची घटनाओं का ब्यौरा देते हुए



11-16 मार्च 2023, नई दिल्ली

बताया कि वह एलजीबीटीक्यू समुदाय के उन लोगों की मदद करना चाहती है, जो भेदभाव और घृणा के शिकार हुए हैं। उन्होंने कहा कि इन सभी अनुभवों ने मुझे अपनी किताब ट्रांसजेंडर अचीवर्स एंड सर्वाइवर्स इन इंडिया लिखने के लिए मजबूर किया।

प्रथम सत्र कहानी-पाठ पर केंद्रित था जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड़ लेखक वसुधेन्द्र ने की। उन्होंने एलजीबीटीक्यू के लैंगिक भेदभाव और पीड़ा के बारे में चर्चा की और कहा कि यह समानता की लड़ाई है। उन्होंने आगे कहा कि इस तरह के साहित्यिक कार्यक्रम लोगों के बीच उचित

ज्ञान फैलाने में मदद करेंगे। सरकार को समलैंगिक, समलैंगिक और उभयलिंगी समुदाय का भी समर्थन करना चाहिए।

इस सत्र में जिन प्रतिभागियों ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत की वे थे - किरण राजकुमार, संजना साइमन, अनज एन.एस. और ए. रेवती।

## सांस्कृतिक कार्यक्रम : कव्वाली



## कार्यक्रमों की सूची

दिनांक	समय	कार्यक्रम	स्थान
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आजो कहानी बुनें (बच्चों के लिए कार्यक्रम)	मेघदूत मुक्ताकाशी सभागार-1
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 11.00 बजे	परिचर्चा : विदेशों में भारतीय साहित्य	वाल्मीकि सभागार
16 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	परिचर्चा : साहित्य और महिला सशक्तीकरण	वाल्मीकि सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 11.00 बजे	परिचर्चा : मातृभाषा का महत्त्व	व्यास सभागार
16 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	परिचर्चा : संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति	व्यास सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.30 बजे	पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी एवं पूर्वी लेखक सम्मेलन)	तिरुवल्लुवर सभागार
16 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	व्यक्ति एवं कृति : कैलाश सत्यायी, प्रख्यात समाज सुधारक एवं नोबेल पुरस्कार विजेता के साथ	तिरुवल्लुवर सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	राष्ट्रीय संगोष्ठी : महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण (जारी...)	साहित्य अकादेमी सभागार, प्रथम तल

\*कार्यक्रमों में परिवर्तन संभव है।

## मीडिया सहयोगी



अन्य जानकारी के लिए देखें

<https://sahitya-akademi.gov.in>

## पुस्तक प्रदर्शनी

पूर्वाह्न 10.00 बजे से सायं 7.00 बजे



Link: <http://sahitya-akademi.org.in/>



## साहित्य अकादेमी

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001  
दूरभाष : 91-11-23386626/27/28  
ई-मेल : [secretary@sahitya-akademi.gov.in](mailto:secretary@sahitya-akademi.gov.in)